मलेशिया में भारतीय समुदाय के साथ हुई बैठक में प्रधानमंत्री का भाषण
12 दिसम्बर, 2005
क्वालालमपुर

मैं यहां मलेशिया में भारतीय समुदाय के लोगों के बीच आकर प्रसन्न हूँ। मेरा विश्वास है कि भारतीय उप-महाद्वीप से बाहर रह रहे भारतीय मूल के लोगों में सबसे बड़ी संख्या मलेशिया के भारतीय समुदाय के लोगों की है। इससे आज शाम की हमारी चर्चा और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। हालांकि, यह केवल संख्या ही नहीं है जो आपको इतना महत्वपूर्ण बनाती है बल्कि पीढ़ियों से अपने देश से दूर रह रहे आप लोगों ने इस देश में भी भारत की आत्मा और इसके विचारों को जीवित रखा है। मैं इस बात के लिए आपकी सराहना करता हूँ। और आपको सलाम करता हूँ।

"छोटे से हिन्दुस्तानें , जिसे हम मलेशिया के कई शहरों में देखते हैं, वे केवल भौगोलिक स्थान मात्र ही नहीं हैं। वे उस भावना के भण्डार हैं जो भारतीय मूल के लोगों को उनकी मातृभूमि से जोड़ती है। अपने पुरखों की भूमि के प्रति अब भी जो लगाव आप लोगों के मन में है, उसके लिए मैं आपकी सराहना करता हूँ। मलेशिया की प्रगति और सम्पन्नता के प्रति आपकी प्रतिबद्धता के लिए भी मैं आपको सलाम करता हूँ। यह हमारे लोगों की अद्वितीय विशेषता है कि एक ओर जहां वे भारत माता के प्रति समर्पित रहते हैं वहीं वे अपने नई अपनाई गई मातृभूमि के प्रति भी वफादार रहते हैं।

मैं इस हाल में मलेशिया के वरिष्ठ मंत्री और मलेशियन इंडियन कांग्रेस के अध्यक्ष श्री डेटो सेरी एस. सामी वेलू की उपस्थिति के लिए आभार प्रकट करता हूँ। हम भारतीय लोग इन्हें हमेशा से ऊँची प्रतिष्ठा वाले अच्छे दोस्त के रूप में जानते हैं। इन्होंने भारत में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनेक मित्र बनाए हैं और ये हमारे दोनों देशों के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का काम करते हैं। ये मलेशिया के महान सपूत और भारत के एक महान दोस्त हैं।

औपनिवेशिक युग के दौरान मलेशिया के लिए भारतीयों का बड़ी संख्या में प्रव्रजन दोनों देशों के बीच आधारभूत संबंधों को दर्शाता है, वहीं अभी हाल ही में कुशल व्यावसायिकों की दूसरी लहर ने आर्थिक उत्साह बढ़ाया है जो निश्चित ही आने वाले वर्षों में हमें अच्छे परिणाम देगा। मलेशिया में आपकी उपस्थिति हमारे आर्थिक संबंधों को तेजी से विकसित करके एक नये उच्चतर स्तर तक ले जाने में सहायक होगी।

भारत और मलेशिया के बीच संबंध कई सदियों से चले आ रहे हैं और ये शांतिपूर्ण और लाभदायक संबंध हमेशा दोनों देशों के लोगों के बीच संपर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के द्योतक रहे हैं। मलेशिया एक अच्छा मेहमाननवाज़ देश रहा है और यहां के समाज ने विदेशी लोगों को प्रभावित किया है। विभिन्नता में सहनशीलता का प्रदर्शन करना, दूसरी सभ्यताओं की अच्छाइयों को ग्रहण करना और उन्हें अद्वितीय और सहिष्णु संस्कृति में समेट लेना मलेशिया को वास्तव में अद्वितीय बना देता है।

भारत के लोग मलेशिया की उपलब्धियों की सराहना करते हैं। हमें गर्व है कि यहां के भारतीय समुदाय ने इस सुन्दर भूमि की प्रगति में काफी योगदान किया है। एक ही पीढ़ी के दौरान मलेशिया ने अपने आप को एक आधुनिक औद्योगिक अर्थव्यवस्था के रूप में ढाल लिया है और यह उत्तरोत्तर ज्ञान-आधारित और उच्च प्रौद्योगिकी वाले उद्योगों की ओर उन्मुख है ताकि भविष्य में देश का और विकास तथा विस्तार हो सके। इसलिए दोनों देशों के बीच अनेक समानताएं हैं और वास्तव में, विश्व के प्रति हमारे दृष्टिकोण में भी काफी समानताएं है।

मलेशिया एक उदार और प्रगतिशील इस्लामिक देश भी है जो एक सफल विकास मॉडल का उदाहरण है और जिसकी 21वीं शताब्दी में भविष्य के लिए प्रासंगिकता है। व्यवसाय और निवेशकर्ताओं के लिए अनुकूल नीतियों वाले एक आधुनिक और औद्योगिक देश के रूप में इसने दिखा दिया है कि इस्लाम और आधुनिकता का आपस में मेल है। "सभ्यताओं के द्वन्द्व" की अवधारणा को नकारते हुए भारत की ही तरह आपने भी यह दिखला दिया है कि "सम्यताओं का मिलन" वास्तव में संभव है और वस्तुतः 21वीं शताब्दी में सफल होने के लिए यही प्रबल संभावना है।

मैं आपको यह संदेश देना चाहता हूँ कि भारत भी प्रगति की राह पर है। भारत को उत्तरोत्तर अवसरों तथा नई संभावनाओं की भूमि के रूप में देखा जा रहा है। विश्व भर में अब भारतीय लोग ऐसे व्यक्ति के रूप में देखे जाने लगे हैं जो ज्ञान, रचनात्मकता और उद्यमशीलता का सम्मान करता है। हमारे सक्रिय लोकतंत्र और सुस्थापित कानून सम्मत शासन ने सतत और सुदृढ़ आर्थिक वृद्धि के लिए लचीले आधार प्रदान किए हैं। ये स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी परिसम्पति हैं। हमारी सरकार इस सुधार प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। एक ऐसी सुधार प्रकिया, जो आम आदमी की देखरेख पर जोर देती है, जो यह सुनिश्चित करती है कि किसी को भी पीछे नहीं छोड़ा जाए और समाज के सभी वर्गों को प्रगति तथा सम्पन्नता की ओर हमारे बढ़ते कदम में शामिल किया जाए। भारत ने सांस्कृतिक तौर पर विश्व के लिए हमेशा से अपने द्वार खोल रखे हैं; अब हम आर्थिक तौर पर भी विश्व के लिए सुलभ हैं। मैं आप लोगों को आमंत्रित करता हूँ कि आप हमारी अर्थव्यवस्था के इस खुलेपन का लाभ उठाएं।

मलेशिया की फर्में अब भारतीय अर्थव्यवस्था में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं और हमारा द्विपक्षीय व्यापार संतोषप्रद ढंग से बढ़ रहा है। लेकिन हम यथा-स्थिति से संतुष्ट नहीं रह सकते। मैं भारतीय कम्पनियों को मलेशिया की परियोजनाओं में भागीदारी करते भी देखना चाहूँगा। मुझे पक्का भरोसा है कि इस देश के साथ व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता (सी.ई.सी.ए.), जिसे प्रारंभ करने के लिए प्रधानमंत्री बदावी और मैं सहमत हुए हैं, इस द्विपक्षीय संबंध को एक नया रूप देगा।

शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें अत्यंत क्षमता मौजूद है। मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि मलेशिया में बड़ी संख्या में प्रैक्टिस कर रहे डॉक्टरों और कानून-विशेषज्ञों ने भारतीय विश्वविद्यालयों से व्यावसायिक डिग्रियां हासिल की हैं। फिर भी, 1980 के दशक के बाद से इस रूझान में विभिन्न कारणों से कमी आई है। हमें न केवल अपने परंपरागत शैक्षिक संबंधों को पुनः बहाल करना होगा बल्कि उसे एक नई गति भी देनी होगी। भारत सरकार ऐसा करने के लिए आपके साथ मिलकर काम करेगी।

आपको यह जानकर खुशी होगी कि हम शिक्षा के क्षेत्र में मलेशिया के साथ एक समझौता-ज्ञापन (एमओयू) को अंतिम रूप दे रहे हैं जिसमें शैक्षिक अर्हताओं की परस्पर पहचान की व्यवस्थाएं एक महत्वपूर्ण घटक हैं। हमें इसमें मेलाका-मनिपाल मेडिकल कॉलेजों के बीच सफल संबंध वाले प्रयोगों को दोहराने के लिए नई परियोजनाएं मिलेगी। हमारी सरकार अपनी शिक्षण संस्थाओं में भारतीय मूल के लोगों के लिए उपलब्ध सीटों की संख्या बढ़ाने के लिए अनेक प्रस्तावों पर विचार कर रही है। भारतीय मूल के लोगों के लिए एक अलग विश्वविद्यालय स्थापित करने पर भी विचार किया जा रहा है। इस पहल पर विश्व भर में भारतीय मूल के लोगों से प्राप्त फीड बैक अत्यंत उत्साहवर्द्धक रहा है।

मैं आपको एक नये भारत के निर्माण के इस उत्साहपूर्ण यात्रा में शामिल होने का निमंत्रण देता हूँ। एक ऐसा भारत जिसके द्वार अपने सभी बच्चों के लिए खुले हैं और एक ऐसा भारत जो सभी की परवाह करता है, जो सभी के लिए है, जो सभी की शरणस्थली है। मैं इस खूबसूरत क्वालालम्पुर शहर में आपकी उदार मेहमाननवाजी के लिए एक बार फिर आपको धन्यवाद देता हूँ।

*****